'तीसरी ताली' उपन्यास में अभिव्यक्त मंगलमुखी समुदाय की त्रासदी

डॉ. गंगाधर रामडगे

प्रस्तुत उपन्यास में परिवार से बेदखल, समाज से बहिष्कृत और उपेक्षा का जीवन जीने वाले मंगलमुखी समुदाय के वास्तविक जीवन का यथार्थ अंकन है। 'मुन्नी मोबाईल' के बाद 'तीसरी ताली' लिखकर हिंदी उपन्यास जगत् में अपनी पहचान बनाने वाले प्रदीप सौरभ का यह दूसरा उपन्यास चर्चा का विषय बना हुआ है, क्योंकि मंगलमुखी समुदाय का परिवेश, उनकी संस्कृति, रहन-सहन तथा उनके जीवन संघर्ष का जीवंत उदाहरण उपन्यास के हर एक पृष्ठ पर उभरकर सामने आता है। उपन्यास के शीर्षक से ही हमें यह ज्ञात हो जाता है कि 'तीसरी ताली' यानि एक ऐसी ताली जिसे समाज ने कभी स्वीकारा ही नहीं। ऐसे मंगल मुखियों को ही समाज में 'हिजड़ा', 'छक्का', 'मामू','कोज्जा', 'तृतीयपंथी', 'उभयलिंगी' आदि अनेक नामों से पहचाना जाता हैं। जैसे यह कोई उनके नाम नहीं, एक भद्दी गाली हो। उनके हिजड़ा होने पर उन्हें घर-परिवार एवं समाज से बेदखल कर दिया जाता है। मनुष्य का हिजड़ा होना जानवरों से भी बद्तर समझा जाता है। इस भारतीय सभ्य समाज की मुख्यधारा में उनका कोई अस्तित्व ही नहीं माना जाता। ऐसी विपरीत परिस्थितियों के संघर्षमयी जीवन में रोटी-कपड़ा और मकान की व्यवस्था स्वयं करते हैं लेकिन दूसरी दुनिया के रूप में, क्योंकि यह सभ्य समाज उन्हें अपने संग रहने और जीने नहीं देता। उन्हें अपने से अलग दूसरी दुनिया के लोगों की भांति समझते हैं। इसका वास्तविक चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में देखने को मिलता है।

'हिजड़ा', 'छक्का' या 'मामू' कहने से अच्छा है कि हम उन्हें 'मंगलमुखी'कहे, इसीनाम से उन्हें जाने-समझे-पहचाने, क्योंकि सर्ववदित है कि यह लोग इंद्र दरबार में भगवान की गनिकाएँ थी। भगवान श्रीराम के आज्ञाकारी भी थे तथा समाज में यह भी प्रचलित है कि इनका दिया हुआ सिक्का और आशीर्वाद कभी व्यर्थ नहीं जाता। इसीलिए शुभकार्यों में इनका आना और आशीर्वाद देना शुभ माना जाता है। उनका आशीर्वाद लेने के लिए लोगमुँह मांगी रकम भी अदा कर देते हैं। लेकिन कहीं न कहीं इस बदलते समय केसाथ-साथ आधुनिक युग में उनकी वास्तविक पहचान पीछे भी छूटती जा रही है। आज के दौर में उपर्युक्त नामों से उनकी दिल्लगी की जाती है, हँसी-मजाक का पात्र बनाया जाता है। 'हिजड़ा', 'छक्का', 'मामू' जैसे आदि नाम सुनते ही मानो उन्हें ऐसा लगता हैं जैसे किसी ने पिगला हुआ शीशा उनकी कान में डाल दिया हो। वे अपनी संवेदनाएँ बयाँ नहीं कर पाते, उन पीड़ाओं को अपने सीने में ही छिपाये रखते हैं। हिंदी साहित्य में इन्हें 'किन्नर' नाम से संबोधित किया गया है जो कि उचित प्रतीत नहीं होता, क्योंकि 'किन्नर' नामक एक जनजाति भी है। साथ ही, राज्य सरकार ने भी यह आदेश जारी किया है कि मंगलमुखी समुदाय को 'किन्नर' नाम से संबोधित करना निरर्थक है। हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिला निवासियों को जब जनजाति का प्रमाण-पत्र दिया जाता है, तो उसमें स्पष्ट लिखा होता है- "The people of Kinnaur District belongs to Kinnaura or Kinnar Tribe which is recognized as Scheduled Tribe under the Scheduled Tribes List (modification) order 1956 and the State of Himachal Pradesh Act, 1970." कुछ महानुभव विद्वानों ने इसी जनजाति को मंगलमुखी समुदाय समझने की भूल की और इन्हें ही 'किन्नर कहना आरंभ कर दिया है। पाठकवर्ग भी बिना किसी जाँच-पड़ताल के इसे सत्य मान बैठा।यह एक साहित्यिक भूल है।

उपन्यास में विनीत उर्फ़ विनीता (महिला मंगलमुखी), राजा उर्फ़ रानी और मंजू ऐसे प्रमुख पात्र हैं जो जीवन में कठिन सेकठिन परिस्थितियाँ आने पर भी नहीं डगमगाते, बल्कि मंगलमुखी समाज के लिए एक नई प्रेरणा बनतेहैं। विनीत के मंगलमुखी

होने से उसके घर-परिवारवाले उससे नाता तोड़ देते हैं और फिर उसेअपनी एक अलग-सी दुनिया बनाने के लिए मजबूर कर देते हैं। परंपरा के अनुसार वह किन्नर समुदाय में शामिल होने की बजाय विनीत से विनीता बनकर ब्यूटीशियन बनता है और स्वयं पूरी दुनिया में अपना नाम रोशन करता है। वहीं राजा एक पुरुष और मंजू एक पूर्ण स्त्री होने के बावजूद भी मंगलमुखी समाज के बन्धनों में जकड़कर रह जाते हैं। गरीबी के चलते अपने पेट की आग को मिटाने के लिए राजा मंगलमुखी समुदाय में शामिल हो जाता है तो वही मंजूके माता-पिता भी गरीबी के चलते उसे डिंपल नामक मंगलमुखी को बेच देते हैं। लालन-पालन और अपनी पूरी जिंदगी इसी समाज में गुजारने की वजह से वह अपनी 'स्त्री' की वास्तविक पहचान को पूर्णरूप से भूल जाती है, वह अपने आप को अन्य मंगलमुखियों के समान समझने लगती है, लेकिन जब वह राजा से गर्भवती हो जाती है तो समुदाय में खलबली मच जाती है। जिसके तुरंत बादही डिंपल नामक मंगलमुखी राजा का पुरुषांग काटकर उसे राजा से रानी बनने के लिए मजबूर कर देती है तो वहीं मंजू का गर्भपात करवा कर उसे आजीवन माँ बनने से वंचित कर देती है। आगे चलकर डिंपल को इस कुकृत्य पर आत्म-ग्लानि भी होती है। यह भी एक मंगलमुखी समाज की वास्तविक सच्चाई हैं जिसे अधिकतर परदे की आड़ में छिपाया जाता है।

विजय कृष्णा जोएक पुरुष मंगलमुखी है, समाज के दुर्व्यवहार से अपनी पहचान छुपाकर फोटोग्राफर का काम करता है, जबकि विनीत उर्फ़ विनीता और मंजू उसे पुरुष समझ कर प्यार कर बैठती है। सुविमल भाई 'गे' और अनिल 'बॉयोसेक्सुअल' हैं तो वहीं यास्मीन-जुलेखा 'लेस्बियन'। यानि कि पूरे एल.जी.बी.टी. समुदाय के माध्यम से लेखक ने 'तीसरी ताली' में उनके जीवन संघर्ष को बारीकी से चित्रित करने का प्रयास किया है। उपन्यास की कथावस्तु इन्हीं पात्रों के इर्द-गिर्द घूमते दिखाई देती है। जिसमें से एक कथानक मंगलमुखियों के जीवन को लेकर आगे बढ़ता है तो दूसरी ओर सामानांतर ही लेस्बियनों, लौंडेबाजों और कालगर्ल्स के धंधे की कहानियाँ भी इससे जुड़ी हुई है। हमें यह कतई नहीं भूलना चाहिए कि मंगलमुखी समाज जिन्हें हम मंगलमुखीया हिजड़ा कहते हैं उनसे 'गे-लेस्बियन-बॉयोसेक्सुअल की श्रेणी भिन्न है एवं उनके जीवन शैली में भी काफी अंतर है, उनकी समस्याएँ भी कुछ मात्रा में अलग हैं, अर्थात् कई लोगों को यह भ्रम रहता है कि ये दोनों एक ही समुदाय के है और वे दोनों समुदाय के लोगों को एक ही दृष्टिकोण से देखने के आदि हो जाते हैं।

उपन्यास की कथावस्तु दिल्ली के हाउसिंग सोसाइटी सिद्धार्थ एन्क्लेव से शुरू होती है और छोटी-मोटी कथाओं से अनेक मोड़ लेते हुए मंगलमुखियों का पवित्र स्थल कुवागम (तमिलनाडु) में जाकर समाप्त होती है। लेखक ने आज की बहु-संस्कृति व्यवस्था के कारण बनते नए रिश्तेगे-लेस्बियन क्लब, पॉप-कल्चर आदि की हकीकत को भी उजागर किया है। 21वीं सदी में अपने आपको आधुनिक कहे जाने के बावजूद समाज ने उन्हें शिक्षा, राजनीति एवं आजीविका आदि से वंचित रखा, समाज भौतिक रूप से तो आगे बढ़ा, किन्तु मूल्यों में निरंतर गिरावट आती गई। जिसके कारण इनको अकेलेपन और अलगाव का शिकार होना पड़ा एवं आज भी उन्हें लिंग के आधार पर होने वाले भेदभाव को झेलना पड़ता है।

आज भी हम देखते हैं कि जिस किसी के घर भी मंगलमुखी बच्चे का जन्म होता है तो उसके माता-पिता समाज में अपनी मान-मर्यादा बचाए रखने के लिए उसे मंगलमुखियों के हवाले कर देते हैं, क्योंकि उसके माँ-बाप और परिवार वाले उसे स्वीकार नहीं कर पाते। पैदा होते ही उन्हीं के समुदाय को सौंप देते हैं या फिर किसी कूड़े-कचरे के ढ़ेर पर छोड़ आते हैं या फिर लोक-लाज से बचने के लिए किसी गटर में फेंककर मार देते हैं, क्योंकि जिस समाज में मंगलमुखी को दया, उपेक्षा और घृणा का पात्र समझा जाता हो उस समाज में माता-पिता ऐसे बच्चे को मार देना ही उचित समझते हैं। ऐसी निर्मम हत्या करने के पीछे की वजह हम और अपना यह सभ्य समाज ही है जो उन्हें देखकर हंसी-मजाक और उपहास का पात्र बनाता है, उन्हें हमारे

समाज में स्थिर होने ही नहीं देता। हमसे अलग दुनिया बनाने केलिए मजबूर कर दिया जाता है। तब इनका न कोई रिश्ते-नाते वाला होता है और न ही अपना कहने वाले माता-पिता। तब वे मंगलमुखी समुदाय में से ही किसी को माँ का दर्जा देते हैं तो किसी को बहन का और वे बड़ी ही सहजता सेकिसी से कोई न कोई रिश्ता बना लेते हैं। उनकी यह दुनिया उन्होंने स्वयं नहीं बनायी, बल्कि समाज ने उन्हें बनाने के लिए मजबूर किया।

एक निश्चित उम्र के बाद उसकी भाव-भंगिमाओं में परिवर्तन होता है तो सब उससे दूर भागते हैं। न उसका कोई हमदर्द बनना चाहता है न ही कोई मित्र। इस समय वह खुद को असामान्य समझ कर अन्दर ही अन्दर अकेलेपन की त्रासदी को झेलता है- "समय बीतने के साथ गौतम साहब के बेटे में लड़कियों जैसे गुण पैदा होने लगे। शारीरिक बदलाव भी प्रखर हो गये। गौतम साहब यह सब देखकर चिंतित थे विनीत गौतम नाम रखा था उन्होंने अपने बेटे का। विनीत घर से बाहर निकलने में कतराने लगा था। बाहर निकलता तो उसके साथ खेलने वाले बच्चे भी उससे किनारा कर लेते। वह अजीब मानसिकता से गुजर रहा था। कई-कई हफ्ते घर के अन्दर बंद रहता था।"[1] विनीत इस परेशानी से छुटकारा पाने के लिए एक दिन जब स्वेच्छा से घर त्याग देता है तो कोई भी उसको ढूंढने की कोशिश नहीं करता। उसकी गुमशुदगी की भी कोई रिपोर्ट पुलिस में नहीं दर्ज करवायी जाती। सभी विनीत के घर न लौटने की मनकामना करते हैं और अंदर ही अन्दर ही अन्दर खुश भी होते हैं- "घर के और सदस्यों को उसकी अनुपस्थिति से कोई फर्क नहीं पड़ रहा था। शायद मन ही मन यह मान रहे थे कि विनीत घर न लौटे तो अच्छा हो। गौतम साहब विनीत को घर में रखने और समाज में जूझने के अपने फैसले पर अफ़सोस जता रहे थे। इसी के चलते उसकी खोज-खबर भी नहीं ली गई। मोहल्लेवालों को यह कहकर शान्त कर दिया गया कि वह अपनी बुआ के घर कानपुर गया है और अब वहीं पड़ेगा।"[2]

घर-परिवार तथा समाज की लापरवाही की वजह से ही इन मंगलमुखियों की स्थिति निरंतर बद्तर होती जा रही है। जिसकी वजह से वे अपने होने न होने को लेकर समाज में सर झुकाकर संघर्षभरा जीवन जीने के लिए मजबूर हैं। क्या इनका मंगलमुखी होना या गे, लेस्बियन होना गुनाह है? नहीं न ! फिर इस सभ्य कहे जाने वाले समाज में उनके साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया जाता है? गे, लेस्बियन या हिजड़ा होना पाप नहीं है, उन्हें मनुष्य के रूप में न देखना पाप है, मंगलमुखी, गे या लेस्बियन से पहले वे एक इंसान है समाज को पहले उन्हें इंसानियत की नज़र से देखना चाहिए और आम जन-मानस की तरह उन्हें भी समाज में उचित स्थान देना चाहिए।

उपन्यास के माध्यम से यह भी देखने को मिलता है कि मंगलमुखी समाज 'धारा 377' का होना जरुरी मानता है, क्योंकि उनका मानना था कि मंगलमुखी समाज और इतर वर्ग यानी गे, लेस्बियन, बॉयोसेक्सुअल कभी एक छत के नीचे नहीं आ सकते। हिजड़ा समुदाय शुरुआत से ही समाज से बहिष्कृत है, जबकि गे और लेस्बियन का होना केवल उसी व्यक्ति पर निर्भर करता है। जब तक वे अपनी असली पहचान नहीं बताते, तब तक उनके लिए कोई समस्या नहीं होती और नहीं उन्हें घर से बेदखल किया जाता है इसके विपरीत मंगलमुखी को उसके जन्म से ही घर-परिवार और समाज से दूर कर दिया जाता है और उसका पैदा होना कुदृष्टि से देखा जाता है। दोनों की समस्याएँ कुछ मात्रा में अलग है। इसीलिए हिजड़ा समुदाय उन्हें अपनों से अलग ही मानता है।

इन मंगलमुखियों के रोजी-रोटी के लिए सरकार ने कोई योजना नहीं बनाई, न ही उन्हें रोजगार, नौकरी दी। बरसों से आज तक सरकार ने देश की गरीबी मिटाने में सफल नहीं हो पायी तो इन अभागों का क्या उद्धार करेगी। इस सच्चाई सेमं गलमुखी अच्छी तरह से वाकिफ है, उन्हें सब पता है कि मंगलमुखियों को मुख्यधारा में लाने के लिए 'हिजड़ा' मानसिकता

वाले राजनेताओं ने भाषण और आश्वासन के जरिये केवल अपनी रोटी सेकने का हीकाम किया है। उन्हें मौलिक अधिकार और न्याय दिलाने की बजाय केवल वोट बैंक के रूप में इस्तमाल करते हुए गुमराह करने की कोशिश की है। समुदाय को विकास की ओर उन्नति करने के लिए जो अधिकार नियम बनाये गये वे केवल कागजों पर ही धरे के धरे रह गये। इसीलिए मंगलमुखी समुदाय भी राजनेता और उनकी सरकार को भी हिजड़ा कहती है, "सांप्रदायिकता की आड़ में सत्ता पर कब्ज़ा किया जाता है। एक हमारी बिरादरी है, जिसमें सभी धर्मों को माननेवाले एक साथ रहते हैं। होली-दीवाली, ईद-बकरीद एक साथ मानते है। हज करने जाते हैं तो चारों धाम की यात्रा भी करते हैं। चर्च में भी हमें सिर झुकाने में शर्म नहीं आती। राजनेताओं पर बरसते हुए उन्होंने कहाँ कि हममें और उनमें कोई फर्क नहीं है। वे पर्दे की पीछे के हिजड़े हैं और हम सामने के।"[3]

वर्तमान स्थिति की बात करें तो सरकार ने सरकार ने उनके मूलभूत अधिकारों को लिए जो नियम-कानून बनाये थे उसे अब धीरे-धीरे लागू किया जा रहा है। जैसा कि आज हम देख सकते हैं, एक मंगलमुखी माँ नहीं बन सकती लेकिन उसे बच्चा गोद लेने का अधिकार दियागया है, मतदान देने लिए पहचान पत्र दिया गया है, सरकारी कागज़ों में स्त्री-पुरुष की श्रेणी के अलावा अन्य श्रेणी को जोड़ा गया है, शिक्षा और नौकरी में उनके लिए आरक्षण की सुविधा दी गयी है। कुछ ही दिनों पहले मंगलमुखियों के साथ अभद्र गाली या बत्तमीजी करने वालों के लिए दण्डित करने का कानून बनाया गया। धीरे-धीरे ही सही यह समाज विकास के मार्ग पर उन्नत होते दिखाई दे रहा है।

निष्कर्ष रूप में यदि कहा जाए तो प्रदीप सौरभ ने 'तीसरी ताली' उपन्यास के माध्यम से न केवल मंगलमुखी समुदाय, बल्कि उनसे जुड़े अन्य समुदायों पर भी कलम चलायी है। जैसे की आनंदी आंटी और गौतम साहब के लिए संतान का दुःख, राजा और मंजू की प्रेम पीड़ा, डिम्पल का अपने किए पर पश्चाताप, शक्तिशाली राजनेताओं द्वारा जनता का शोषण, पुलिस का अमानवीय व्यवहार आदि संबंधी गहन मानवीय मूल्यों की पड़ताल की गई है। ऐसे अनेक छोटी-मोटी कथाओं के माध्यम से लेखक ने मंगलमुखी समाज के उन पहलुओं को भी उजागर किया है जो वास्तव मेंलोग आज भी उनसे अनभिज्ञ हैं। किस तरह सभ्य, सुसंस्कृत लिंगवादी समाज इनको तिरस्कृत करके अपने से अलग होने पर एक विशिष्ट जाति का दर्जा दे देता है, लेखक ने उन सभी पहलुओं को उपन्यास के माध्यम से सबके सामने लाने का प्रयास किया है।

समाजसेवी, साहित्यकार तथा शोध-अध्येताओं के कारण समाज में आजएक नई चेतना विकसित हो रही है, जनजागृति हो रही है। जिसके चलते मंगलमुखियों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने में मदद मिल रही है।

आधार ग्रंथ

1. प्रदीप सौरभ, 'तीसरी ताली'(2011), वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली, पृष्ठ सं. 82
2. वही, पृष्ठ सं. 83
3. वही, पृष्ठ सं. 137

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
टॅपरूट महाविद्यालय, सी. वी. रमन नगर